© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 08 | October – December 2017

भारत अमेरिका संबंधों का अध्ययन

Suman Khatri, Assistant Professor, Department of Pol. Science
Saini co-Education College Rohtak

भारत की आज़ादी के बाद अमरीका से उसके संबंध शीतयुद्ध के दौर, अविश्वास और भारत के परमाणु कार्यक्रम को लेकर खिंचाव में बंधे रहे हैं|
पिछले कुछ वर्षों से इनमें गर्माहट देखी जा रही है आर्थिक और राजनीतिक मोर्चों पर सहयोग में भी इज़ाफ़ा हुआ है|

1947 के बाद से शीत युद्ध की समाप्ति तक भारत-अमेरिका के सम्बन्ध:-

1947 के बाद से शीत युद्ध की समाप्ति तक भारत-अमेरिका के सम्बन्ध, भारत के पाकिस्तान, चीन, और सोवियत संघ के साथ संबंधों के स्वरुप पर आधरित थे।अमेरिका ने हमेशा ही सोवियत संघ के साथ भारत के विशेष संबंधों को शीत युद्ध के सन्दर्भ में देखा। सोवियत संघ के विघटन के साथ ही भारत के प्रति अमेरिका का नजरिया बदला। शीत युद्धोत्तर काल में भारत के अपने परमाणु कार्यक्रम को बंद न करने का निर्णय भारत-अमेरिका संबंधों में विवाद का एक प्रमुख विषय रहा है।1998 में सबसे ज्यादा तनावपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो गयी जब अमेरिका ने भारत के परमाणु परिक्षण के बाद कड़े आर्थिक प्रतिबन्ध लागू कर दिए।

पोखरण परमाणु परीक्षणों के बाद अमेरिका द्वारा भारत के खिलाफ कई आर्थिक प्रतिबंध आरोपित कर दिये गये थे। किंतु कुछ समयांतराल पश्चात् ही दोनों देशों के आपसी संबंधन केवल सामान्य बल्कि अभूतपूर्व ढंग से घनिष्ठ हो गये। मार्च 2000 में तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति विल क्लिंटन द्वारा भारत को यात्रा की गयी यात्रा के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति ने माना कि दोनों देश नई सदी की ओर समान ढंग से देखते हैं। कुछ समय बाद ही क्लिंटन प्रशासन द्वारा भारत पर आरोपित अधिकांश प्रतिबंध उठा लिए गये। भारत-अमेरिकी अंतर्निर्भरता को बढ़ाने में अमेरिका स्थित सफल भारतीय समुदाय की भूमिका अति महत्वपूर्ण रही है। दोनों देशों के मध्य विचारों के नियमित आदान-प्रदान हेतु एक संस्थागत तंत्र भी निर्मित किया गया। सितंबर 2000 में भारतीय प्रधानमंत्री द्वारा अमेरिका की यात्रा की गयी। उन्होंने कांग्रेस के संयुक्त अधिवेशन को संबोधित किया और सार्वभौमिक व राज्य समर्थित आतंकवाद को समाप्त करने हेतु दोनों देशों द्वारा एकजुट प्रयास करने का आह्वान किया। दोनों देशों के बीच आर्थिक-व्यापारिक कार्य-कलापों में भी कई गुना वृद्धि हुई। भारत-अमेरिका के बीच बढ़ती निकटता ने पाकिस्तान के पक्ष में मौजूद अंतरराष्ट्रीय समर्थन की अत्यंत क्षीण बना दिया है।

जनवरी 2000 में स्थापित आतंकवाद के मुकाबले से संबद्ध संयुक्त कार्यदल एक-दूसरे की चिंताओं को और समझने के लिए एक उपयोगी तंत्र साबित हुआ। 31 अगस्त-1 सितम्बर, 2001 तक नई दिल्ली में आयोजित जेडब्ल्यूजीसीटी की छठी बैठक में अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद की वर्तमान प्रवृत्तियों और अफगानिस्तान की स्थिति पर चर्चा की गयी। दोनों पक्षों ने आतंकवाद का मुकाबला करने के संबंध में विधिप्रवर्तन, वित्तीय और अन्य उपायों पर विचारों का आदान-प्रदान किया, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण कार्यक्रम पर सहमति व्यक्त की तथा आतंकवाद का मुकाबला करने के बहु-पक्षीय प्रयासों पर विचारों का आदान-प्रदान किया |